>

Title: Situation arising out of hurting of sentiments of Buddhist followers as a result of the printing of Lord Buddha's pictures on shoes by an American company .

श्री हर्ष वर्धन (महाराजगंज, उ.प्र.): माननीय सभापति जी, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया। ...(व्यवधान) मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान एक अत्यंत विकट समस्या की तरफ उठाना चाहता हूं। अमेरिका में वाशिंगटन स्थित एक जूता बनाने वाली कम्पनी ने पिछले माह अपना उत्पाद जूता बाजार में उतारा, जिस पर बौद्ध धर्म का चित्रण है। विश्व भर में बौद्ध धर्म के जो अनुयायी हैं, उनके लिए यह घोर अपमान का विषय है। भारत में बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव 2600 साल पहले हुआ था। इसी स्थान से जिस धर्म का प्रार्दुभाव हुआ, उसे अमेरिका की एक जूता बनाने वाली कम्पनी, उस बौद्ध भगवान को जिसके करोड़ों अनुयायी आज विश्व भर में फैले हुए हैं, उनकी धार्मिक भावनाओं पर जो आघात पहुंचा रही है, यह अत्यंत विचारणीय विषय है। इससे बौद्ध धर्म के हितों की रक्षा होनी चाहिए। विश्व भर के बौद्ध धर्मावलंबियों का केन्द्र बिन्दु यहीं पर है। बौद्ध का जन्म स्थान, बौद्ध का निर्वाण स्थल, जहां पर बौद्ध भगवान ने दीक्षा दी, जहां से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया, वह सब भारत में स्थित है।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से मांग करता हूं कि वह अमरीका से इस संबंध में अपना विरोध प्रकट करते हुए यह भी सुनिश्चित करे कि भविष्य में कभी इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। हमारा देश धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहां पर जो धर्म हैं और उनके जो भगवान हैं, उन्हें लोग मानते हैं। उनकी पुनरावृति फिर कहीं न हो, यही मेरा आपसे कहना है।

सभापति महोदय : श्री पी.एल. पुनिया अपने आपको श्री हर्ष वर्धन द्वारा उठाये गये विषय के साथ संबद्ध करते हैं।